International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 1035-1038

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 1035-1038
www.allresearchjournal.com
Received: 24-11-2016
Accepted: 27-12-2016

डॉ. प्रतिभा पाल
असिस्टेंट प्रोफेसर,
गृहविज्ञान, गांधी शताब्दी स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोयलसा,
आजमगढ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. प्रतिभा पाल
असिस्टेंट प्रोफेसर,
गृहविज्ञान, गांधी शताब्दी स्मारक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोयलसा,
आजमगढ, उत्तर प्रदेश, भारत

बालकों तथा बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास पर विद्यालय के प्रभाव का मूल्यांकन

डॉ. प्रतिभा पाल

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत बाल्यावस्था के दौरान बालक / बालिकाओं के व्यक्तित्व का निर्धारण करने वाले तत्वों में विद्यालय तथा समाज के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है। बाल्यावस्था के दौरान बालक अत्यंत ही संवेदनशील स्थिति में होते हैं अतः संवेदनशीलता की इस स्थिति में व्यक्तित्व निर्धारक तत्वों का योगदान अहम हो जाता है यह अध्ययन पेशेवर चिकित्सकों तथा मनोवैज्ञानिकों हेतु बेहद उपयोगी सिद्ध होगी अतः इस विषय के संबंध में अध्ययन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मूल शब्द - व्यक्तित्व, बालक का मानसिक विकास, बाल्यावस्था

प्रस्तावना
व्यक्तित्व से तात्पर्य व्यक्ति के ऐसे गुणों अथवा विशेषताओं से है जो किसी अन्य व्यक्ति में नहीं पाए जाते। व्यक्तित्व से संबंधित भिन्नभिन्न-विशेषताओं के परिणाम स्वरूप ही एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। मानवों में व्यक्तित्व निर्धारण की यह अवस्था बालक के जन्म के पश्चात बाल्यावस्था के दौरान ही प्रारंभ हो जाती है जिसे कई चरणों से होकर गुजरना पड़ता है। व्यक्तित्व विकास के इन महत्वपूर्ण चरणों में माता पिता, परिवारिक माहौल, वातावरण, गली मोहल्ला, घर, समाज तथा विद्यालय जैसे महत्वपूर्ण कारक अपनी भूमिका निभाते हैं। आयु की प्रत्येक अवस्था के दौरान बालक इन कारकों से कुछ ना कुछ सीखता रहता है जिसका सीधा प्रभाव उसके व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। व्यक्तित्व विकास की अवस्थाएं सकारात्मक या नकारात्मक दोनों हो सकती हैं जिसके पीछे व्यक्तित्व निर्धारक तत्वों की स्थिति का सकारात्मक या नकारात्मक होना पाया जाता है।

क्योंकि बाल्यवस्था अत्यंत ही संवेदनशील अवस्था होती है अतः इस दौरान बालक अपना मानसिक विकास कर रहा होता है ऐसे परिवेश में वह अपने आसपास के माहौल से बहुत कुछ सीखता व समझता है।

ग्लासनेर (1962) के अनुसार, " जिस प्रकार जीव का शुभारंभ गर्भाशय में होता है उसी प्रकार व्यक्तित्व का विकास पारिवारिक संबंधों के गर्भाशय से ही प्रारंभ होता है। "

व्यक्तित्व की वास्तविक अर्थ के अनुसार, व्यक्ति में जितनी विशेषताएं एवं विलक्षणताएं होती है उन सभी का समन्वित एवं संगठित रूप ही व्यक्तित्व होता है। अर्थात व्यक्ति के व्यक्तित्व में आंतरिक तथा बाह्य पहलुओं का संगठन पाया जाता है। इसी प्रकार बालक के भौतिक जगत में भी उसके जन्म के पश्चात अविकसित शरीर, मस्तिष्क एवं कुछ मूल प्रवृत्तियां अवतरित होती हैं। जिनके आधार पर बालक धीरे-धीरे भौतिक परिवेश से प्रतिक्रिया करता है।

अध्ययन उद्देश्य

उक्त अध्ययन के अंतर्गत निम्न उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अध्ययन कार्य संपन्न किया गया है।

1. सामाजिक स्तर पर व्यक्तित्व की अवधारणा का अध्ययन करना।
2. बालक तथा बालिकाओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय के प्रभाव का मूल्यांकन

विश्लेषणात्मक व्याख्या

1. व्यक्तित्व की सामाजिक अवधारणा – व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग अनेकों क्षेत्रों में किया जाता है जिनके अंतर्गत व्यक्ति से संबंधित विशेषताओं को सम्मिलित किया जाता है । वास्तव में व्यक्तित्व का निर्धारण समाज में उपस्थित सभी इकाइयों (जैसे माता-पिता घर परिवार आस-पड़ोस गली मोहल्ला सांस्कृतिक गतिविधियां शादी विवाह) द्वारा सामूहिक रूप से होता रहता है।

व्यक्तित्व विकास निरंतर चलने वाली एक प्रक्रिया है जिसमें समय-समय पर विभिन्न सामाजिक इकाइयों द्वारा किसी भी व्यक्ति अथवा बालक के विकास को प्रभावित किया जाता है। घर परिवार एवम् विद्यालय के अतिरिक्त बालक के व्यक्तित्व पर समाज का भी प्रभाव पड़ता है। जब व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले कार्यों की प्रशंसा समाज के महत्वपूर्ण तथा पारिवारिक सदस्यों द्वारा मिलती है तब ऐसी स्थिति में बालक में सकारात्मक शील गुणों का विकास होता है। सामाजिक स्तर पर प्रशंसा का अनुमोदन प्राप्त करने की बालक में तीव्र इच्छा शक्ति विकसित होती है। सामाजिक रूप से बालक जिन व्यक्तियों को महत्वपूर्ण मानता है वह स्वयं उनके जैसा व्यवहार करने लगता है। जिससे कि उसकी भी प्रशंसा की जाए। बालक के लिए ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों में उसके माता पिता, अध्यापक तथा साथी आते हैं जिनके माध्यम से बालक को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है। सामाजिक स्वीकृति से बालकों में श्रेष्ठता का भाव, नेतृत्व तथा आत्म विश्वास जैसे शील गुणों का विकास होता है जिनका प्रभाव बालक के व्यक्तित्व पर पड़ता है। इसके अलावा सामाजिक रीतियों, परंपराओं तथा रहन-सहन के तौर-तरीकों कभी सीधा प्रभाव बालक पर पड़ता है। प्राय यह देखा जाता है कि ऐसे बच्चे जिनका आर्थिक सामाजिक स्तर उच्च कोटि का है उन्हें उच्च कोटि की ही भौतिक सुविधाएं भी प्राप्त होती हैं। अतः इस प्रकार के बच्चों का व्यक्तित्व निर्धारण निम्न आर्थिक सामाजिक स्तर वाले बच्चों की तुलना में सटीकता से होता है। इसके अतिरिक्त जो बच्चे सामाजिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में

भाग लेते हैं व सामाजिक गतिविधियों से परिचित होते हैं उनके भीतर अनुशासन तथा बड़ों का आदर सम्मान जैसी आदतें विकसित हो जाती हैं। इसी इसी क्रम में परस्पर सहयोग, मिलजुल कर रहने, प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता आदि व्यक्तित्व गुणों का भी विकास होता है। समाज के नकारात्मक पहलू की बात की जाए तो ऐसे सामाजिक वातावरण में बच्चे नकारात्मक गुणों को अपने भीतर समाहित कर लेते हैं ऐसी स्थितियों में अपने आसपास लड़ाई झगड़े नशे तथा जुआ खेलने जैसी परिस्थितियां का प्रभाव भी उनकी मन है स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। समाज के अंतर्गत ही बालक गैंग तथा क्लब आदि जैसी परिस्थितियों में सम्मिलित रहता है सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव भी बालक के व्यक्तित्व पर पड़ता है। बालक अपने आसपास अपेक्षित सामाजिक वातावरण देखता है जिसके परिणाम स्वरूप उसमें कुंठा अनुशासनहीनता तथा चोरी करने जैसे गुणों का विकास होने लगता है। सामाजिक परिवेश में बालकों में चारित्रिक गुणों के साथ-साथ नागरिक गुणों का विकास होता है वे स्वयं को धनवान , विद्वान तथा सामाजिक प्रतिष्ठा के रूप में देखने लगते हैं।

2. बालक/बालिकाओं के व्यक्तित्व पर विद्यालय का प्रभाव- विद्यालय व्यक्तित्व विकास का एक अन्य महत्वपूर्ण मंच होते हैं। जिसमें 6 वर्ष से 17 वर्ष तक के बालक तथा बालिकाएं प्रतिदिन 6 से 7 घंटे व्यतीत करते हैं। परिवार की अतिरिक्त सर्वाधिक समय तक बालकों का विद्यालय वातावरण में रहना उनके शारीरिक विकास तथा मानसिक विकास के साथ साथ व्यक्तित्व के निर्धारण में भी अहम भूमिका निभाता है। थॉमसन के अनुसार 'विद्यालय बालकों का मानसिक, चारित्रिक, सामुदायिक, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय विकास करता है तथा स्वस्थ रखने हेतु प्रशिक्षण देता है। "

क्योंकि विद्यालयों में ही यह सामर्थ्य है कि वे बालक व बालिकाओं में सामाजिकरण जैसे गुणों को उत्पन्न कर सकते हैं। जिससे बालक तथा बालिकाओं में समाज के प्रति आदर सम्मान, देश सेवा तथा ज्ञान अर्जन जैसे शील गुणों का विकास संभव हो पाता है।

बालकों के व्यक्तित्व विकास में विद्यालयों का अहम योगदान रहता है प्राय यह देखा जाता है कि कई विद्यालयों में संतुलित शिक्षा नहीं प्रदान की जाती है अथवा बालक के शारीरिक तथा मानसिक विकास पर समुचित ध्यान नहीं दिया जाता है।

विद्यालय के अंतर्गत शिक्षक तथा बालक के सहपाठियों का प्रभाव बालक के व्यक्तित्व पर स्पष्टत दिखाई देता है।

विद्यालय में प्रवेश के साथ ही बालक के साथी मित्रों की संख्या भी निरंतर बढ़ने लगती है जिसमें एक प्रकार के समूह का निर्माण होता है। ऐसे समूहों के कुछ स्वस्थ तथा साहसी बालकों मे नेतृत्व का गुण उत्पन्न हो जाता है। बालकों में आत्मनिर्भरता की प्रवृत्ति उत्पन्न होने लगती है।

हरलॉक (1978) के अनुसार, 'विद्यालय प्रभावों के रूप में, कक्षा का सावेगिक वातावरण, अध्यापक, अनुशासन एवं शैक्षिक उपलब्धियों का प्रभाव बालक के व्यक्तित्व के विकास पर प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त कई शोध कक्षा के अध्ययन का व्यक्तित्व विकास पर महत्व बताते हुए कहते है कि विद्यालय की ऐसी कक्षाओं के द्वारा विविधताओं वाले बालक तथा बालिकाओं में विविधता, वैश्वीकरण तथा सामाजिकरण का सम्मान करने की भावनाएं जागृत होती हैं।

विद्यालय के भीतर सबसे अहम भूमिका में शिक्षक होते हैं व्यक्तित्व का प्रभाव भी बालकों के व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है शिक्षकों द्वारा

शिक्षण सामग्री के पठन-पाठन के तौर तरीके, विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान, विद्यार्थियों की भावनाओं को समझना व उनका निवारण करना आदि जैसे शैक्षिक क्रियाकलाप बालक तथा बालिकाओं मैं चारित्रिक गुणों का विकास करते हैं। एक शिक्षक का यह कर्तव्य बन जाता है कि वह अपने छात्र-छात्राओं को केवल किताबी ज्ञान तक ही सीमित ना रखें क्योंकि उस तकिए ज्ञान केवल परीक्षा उत्तीर्ण करवाने का साधन तो बन सकता है परंतु बालक के सर्वांगीण विकास की कल्पना में यह सम्मिलित नहीं किया जा सकता। जिसके लिए एक शिक्षक को बालक तथा बालिकाओं में व्यवहारिक गुणों का निर्माण करना पड़ता है।

शिक्षक विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रूप में स्वयं की भूमिका को निर्वहन करता है जिस प्रकार किसी भी समाज में एक सामाजिक नेता सभी लोगों की भावनाओं का सम्मान करता है ठीक उसी प्रकार शिक्षक एक ही कक्षा में पढ़ने वाले सभी बालक बालिकाओं की भावनाओं को समझता है।

विद्यालय अवधि के दौरान खेलों का आयोजन भी बालक बालिकाओं में नए गुणों का विकास करता है। क्रीडा स्थल पर खेल के नियमों को ध्यान में रखते हुए खेल भावना का परिचय देना तथा प्रतिस्पर्धा जैसे शीलगुण ओ का विकसित होना भी बालक तथा बालिकाओं के व्यक्तित्व को निखारने का काम करते हैं। विद्यालय के प्रांगण में उपस्थित पुस्तकालय बालकों तथा बालिकाओं में एकाग्रता तथा शिक्षा के प्रति रुचि को बढ़ावा देने में अपना अहम भूमिका निभाते हैं।

प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री स्पेंसर ने विद्यालय के पाठ्यक्रम बालक तथा बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण माना है उनके अनुसार गणित विषय बालकों को तर्क शक्ति के विकास, कल्पना शक्ति के विकास के लिए साहित्य, स्मृति के विकास के लिए विदेशी भाषाएं, सहनशीलता के लिए कास्ट कला, तथा शारीरिक स्वास्थ्य के लिए व्यायाम का चयन किया जाना चाहिए।

पाठ्यक्रम का चयन बच्चों की आयु तथा रुचि को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। इन पाठ्यक्रमों का उद्देश्य बालकों की मानसिक तथा बुद्धि क्षमताएं विकसित करना है।

निष्कर्ष

संपूर्ण अध्ययन की समीक्षा करने के पश्चात यह समझा जा सकता है कि बालक तथा बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास के मुख्य अवयव के रूप में विद्यालय तथा विद्यालय गतिविधियां अपना अहम किरदार निभाती हैं। चूंकि व्यक्तित्व विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है अतः इसका सामाजिक स्तरीकरण भी होता रहता है जिस के मुख्य अवयवों के रूप में घर तथा सामाजिक परिवेश के पश्चात विद्यालय भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करता है। विद्यालय गतिविधियों के दौरान अपने दैनिक समय में से *7* से *8* घंटे तक बालक बालिकाओं का विद्यालय वातावरण तथा शिक्षकों से सीधा संपर्क रहता है अतः ऐसी स्थिति में विद्यालय वातावरण शिक्षकों तथा सहपाठियों के व्यक्तित्व का प्रभाव बालक तथा बालिकाओं पर पड़ता है ।

संदर्भ सूची

1. मंगल एस के, मंगल शुभ्रा, अधिगम एवम शिक्षण, PHI लर्निंग प्रा.लि.
2. विकासात्मक मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स
3. मधु अस्थाना, किरण बाला वर्मा, व्यक्तित्व मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स